

प्रारंभिक परीक्षा

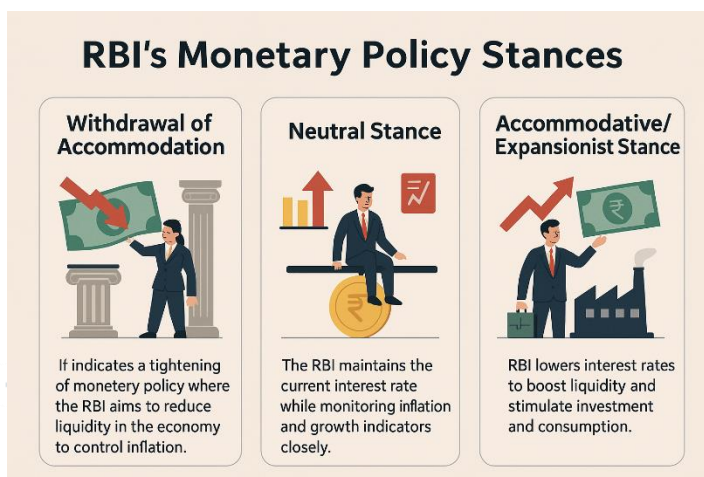
रेपो दर (Repo Rate)

संदर्भ

हाल ही में RBI की मौद्रिक नीति समिति (MPC) ने रेपो दर में 25 आधार अंकों की कटौती करके इसे 6% करने का निर्णय लिया है।

रेपो दर के बारे में -

- **रेपो दर:** यह वह दर है जिस पर RBI वाणिज्यिक बैंकों को मुद्रा (पैसा) उधार देता है।
- **रिवर्स रेपो दर:** यह RBI द्वारा वाणिज्यिक बैंकों को दिया जाने वाला ब्याज है, जब वे अपनी अतिरिक्त नकदी केंद्रीय बैंक के पास जमा करते हैं।
- **अर्थव्यवस्था पर रेपो दर का प्रभाव:**
 - **रेपो दर में कमी:** आर्थिक गतिविधि को बढ़ावा मिलता है।
 - **रेपो दर में वृद्धि:** मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने में मदद मिलती है।



Monetary Policy Committee

- MPC was constituted in **2016** as a statutory body under the **RBI Act** to formulate monetary policy in India (on recommendation of **Urjit Patel committee**)

- **Composition (Chairperson + 5 Members):** Quorum: 4 members.
 - RBI Governor - ex-officio chairperson
 - RBI Deputy Governor + 1 more member from RBI to be nominated by the Central Board of Directors.
 - 3 other members are appointed by the Central Government.



- Members of MPC hold office for a period of **4 years** and are **not eligible for re-appointment.**
- MPC is required to **meet at least four times in a year.**
- MPC takes decisions based on **majority vote** (by those who are present and voting. In case of a tie, the **RBI governor will have the second or casting vote.**
- **The decision of the committee is binding on the RBI.**

UPSC PYQ

प्रश्न. यदि RBI प्रसारवादी मौद्रिक नीति का अनुसरण करने का निर्णय लेता है, तो वह निम्नलिखित में से क्या नहीं करेगा? (2020)

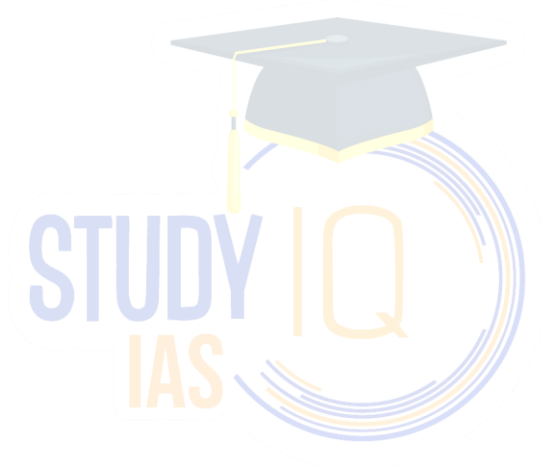
1. वैधानिक तरलता अनुपात को घटाकर उसे अनुकूलित करना
2. सीमांत स्थायी सुविधा दर को बढ़ाना
3. बैंक दर को घटाना तथा रेपो दर को भी घटाना

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b)

स्रोत: [Indian Express - Repo Rate](#)



राफेल- M जेट

संदर्भ

सुरक्षा मामलों की कैबिनेट समिति (CCS) ने भारतीय नौसेना के लिए 26 राफेल- M (मरीन) लड़ाकू विमानों की खरीद के लिए फ्रांस के साथ 63,000 करोड़ रुपये के सौदे को मंजूरी दे दी है।

राफेल-M लड़ाकू विमान के बारे में -

- यह डर्सील्ट एविएशन (फ्रांस) द्वारा विकसित राफेल मल्टी-रोल फाइटर जेट का नौसैनिक संस्करण है। इसे विशेष रूप से विमान वाहक संचालन के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- राफेल-M की मुख्य विशेषताएं:
 - विमान वाहक पर अरेस्टेड लैंडिंग के लिए टेल हुक।
 - स्की-जंप या कैटापुल्ट लॉन्च के लिए मजबूत लैंडिंग गियर।
 - वाहकों पर कॉम्पैक्ट भंडारण के लिए फोल्डिंग विंग्स।
 - यह उन्नत एवियोनिक्स, रडार और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणालियों से लैस है।
 - यह हवा से हवा, हवा से जमीन, टोही और परमाणु हमले मिशन करने में सक्षम है।
- इन जेट विमानों को आईएनएस विक्रमादित्य और आईएनएस विक्रान्त (भारत के दो विमान वाहक) पर तैनात किया जाना है।
 - दोनों वाहक स्की-जंप लॉन्च सिस्टम (STOBAR - शॉर्ट टेक-ऑफ बट अरेस्टेड रिकवरी) का उपयोग करते हैं।
- भारतीय नौसेना वर्तमान में अपने दोनों विमान वाहकों पर MiG -29K लड़ाकू विमानों का उपयोग करती है।
- राफेल 4.5 पीढ़ी का विमान है जिसकी अधिकतम गति 1.8 मैक (1 मैक = 1235 किमी/घंटा) है। (यूपीएससी प्रारंभिक परीक्षा -2024 में पूछा गया प्रश्न)।



सुरक्षा पर कैबिनेट समिति (CCS)

- अध्यक्षता: प्रधानमंत्री।
- सदस्य: रक्षा, गृह, वित्त और विदेश मंत्री।
- कार्य:
 - यह रक्षा नीति और व्यय पर सभी महत्वपूर्ण निर्णय लेता है।
 - यह राष्ट्रीय सुरक्षा निकायों में अधिकारियों की नियुक्तियों के संबंध में सर्वोच्च निकाय है।
 - भारत की कानून व्यवस्था और राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित सभी मुद्दों से संबंधित है।

स्रोत: [The Hindu - Rafale-M jets](#)

वनाग्नि से कार्बन उत्सर्जन

संदर्भ

विश्व भर में वनाग्नि या जंगल की आग से, वातावरण में अत्यधिक मात्रा में कार्बन उत्सर्जित हुआ।

समाचार के बारे में और अधिक जानकारी -

- यूरोपीय संघ की कोपरनिकस एटमॉस्फियर मॉनिटरिंग सर्विस (CAMS) के अनुसार, केवल जनवरी 2025 में वनाग्नि से वायुमंडल में लगभग 800,000 टन कार्बन उत्सर्जित हुआ।
 - यह एक दशक पूर्व वनाग्नि से होने वाले कार्बन उत्सर्जन से, 4 गुना अधिक है।
- इसके अतिरिक्त, भारत में वनाग्नि से वार्षिक रूप से लगभग 69 मिलियन टन CO₂ उत्सर्जित होता है।

वनाग्नि से कार्बन उत्सर्जन -

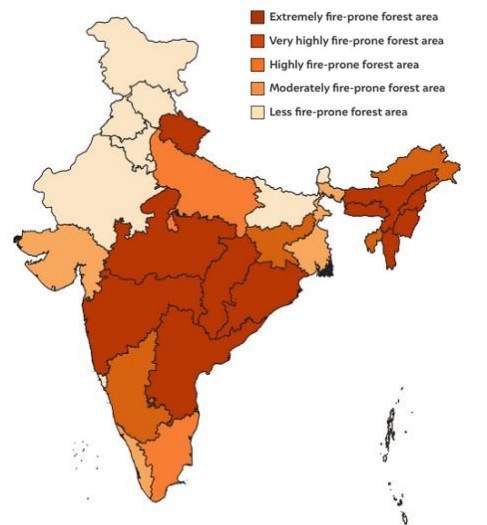
- वनों या जंगलों, पीटलैंड और घास के मैदानों के जलने से, वातावरण में कार्बन का स्तर अत्यधिक बढ़ जाता है।
- वन सामान्य तौर पर CO₂ को अवशोषित करके, कार्बन सिंक के रूप में कार्य करते हैं।
- जब वे जलते हैं, तो वे संग्रहीत कार्बन उत्सर्जित करते हैं तथा वर्षों या दशकों तक अपनी कार्बन अवशोषण क्षमता खो देते हैं।
- निहितार्थ:**
 - वे प्राकृतिक कार्बन भंडारों को जलाकर ग्लोबल वार्मिंग में योगदान देते हैं, जिसने ऐतिहासिक रूप से पृथ्वी की जलवायु को विनियमित करने में सहायता की है।
 - धुएँ और सूक्ष्म कणों के कारण सार्वजनिक स्वास्थ्य जोखिम बढ़ जाता है।
 - जैव विविधता एवं मृदा की गुणवत्ता को प्रभावित करता है।

फीडबैक लूप खतरा (NOAA's के 2024 आर्कटिक रिपोर्ट कार्ड में प्रस्तुत)

- वनाग्नि → कार्बन उत्सर्जन → ग्लोबल वार्मिंग → अधिक आग → और अधिक कार्बन उत्सर्जन → मजबूत फीडबैक लूप।

भारत में वनाग्नि के हॉटस्पॉट -

- भारत में:** भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2023 के अनुसार, उत्तराखंड (केवल 5,315 वनाग्नि देखी गई), ओडिशा और छत्तीसगढ़ ने वर्ष के दौरान सबसे अधिक वनाग्नि की सूचना दी।
 - रिपोर्ट में देश भर में आग के हॉटस्पॉट की संख्या में गिरावट की प्रवृत्ति भी देखी गई - 2021-22 में 2.23 लाख से 2022-23 में 2.12 लाख, और 2023-24 में और कम होकर 2.03 लाख हो गई।

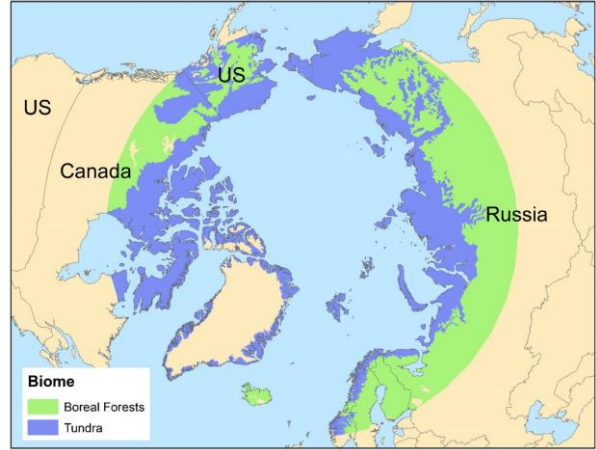


तथ्य:

- भारतीय वन सर्वेक्षण का वन अग्नि जियो-पोर्टल, वनाग्नि के संदर्भ में जानकारी के, एकल बिंदु के रूप में कार्य करता है।

आर्कटिक बोरियल ज़ोन(ABZ) की बदलती प्रवृत्ति

- नेचर क्लाइमेट चेंज में प्रकाशित 2024 के एक अध्ययन के अनुसार:
 - **30%** से अधिक **ABZ** कार्बन को अवशोषित करने से लेकर उसे जारी करने की ओर स्थानांतरित हो गया है, जिसका मुख्य कारण लगातार बढ़ती और तीव्र वनाग्नि है।
 - शोधकर्ताओं ने **200** स्थलों (1990-2020) में कार्बन पैटर्न को ट्रैक किया, जिसमें पाया गया कि- **2001-2020** तक **ABZ** एक शुद्ध सिंक बना रहा, किन्तु अब इस क्षेत्र का एक तिहाई हिस्सा **CO₂** का शुद्ध स्रोत बन गया है।
- यह उलटफेर निम्न से प्रेरित है:
 - **वनाग्नि:** पूर्वी साइबेरिया की आग (2003) और टिमिन्स वनाग्नि (कनाडा, 2012) जैसी घटनाओं ने, **ABZ** द्वारा अवशोषित करने की तुलना में अधिक कार्बन उत्सर्जित किया।
 - **पर्माफ्रॉस्ट का पिघलना:** तापमान बढ़ने से मिट्टी सूख जाती है, वनस्पति में परिवर्तन होता है एवं कार्बनिक पदार्थों का विघटन होता है, जिससे संग्रहीत कार्बन जारी होता है।



स्रोत: [The Hindu: As wildfires scorch the earth, the Arctic biome rejects more carbon](#)

समाचार संक्षेप में

नीलगिरि तहर

- केरल और तमिलनाडु ने नीलगिरि तहर के लिए संयुक्त जनसंख्या सर्वेक्षण करने का निर्णय लिया है।
- नीलगिरि तहर के बारे में -**
 - यह भारत के पश्चिमी घाटों में पाई जाने वाली एक पहाड़ी बकरी है। इसे स्थानीय रूप से तमिल और मलयालम में "वरयाडू" के नाम से जाना जाता है।
 - यह भारत में मौजूद 12 प्रजातियों में से दक्षिणी भारत में एकमात्र पहाड़ी खुर वाला जानवर है।
 - खुर वाला:** एक शाकाहारी खुर वाला स्तनपायी। जैसे गाय, भेड़, घोड़ा।
 - यह तमिलनाडु का राज्य पशु भी है।
 - निवास स्थान:** 1,200-2,600 मीटर की ऊंचाई पर पर्वतीय घास के मैदानों (शोला-घास के मैदान पारिस्थितिकी तंत्र) को पसंद करता है।
 - एराविकुलम राष्ट्रीय उद्यान** में नीलगिरि तहर की सबसे अधिक घनत्व और सबसे बड़ी जीवित आबादी है।
 - नीलगिरि तहर के एक वयस्क नर को **सैडल बैक** के नाम से जाना जाता है। (उनकी पीठ पर हल्के रंग के पैच के कारण)
 - सींग के छल्ले:** इसकी उम्र इसके सींगों पर बने विकास के छल्लों की गिनती करके निर्धारित की जाती है, जो पेड़ के छल्लों के समान, सालाना बनते हैं।
 - संरक्षण की स्थिति:**
 - IUCN - संकटग्रस्त
 - WPA, 1972 - अनुसूची 1
 - CITES - परिशिष्ट 1



स्रोत: [The Hindu - Nilgiri Tahr](#)

प्रोजेक्ट आइस-क्रंच (Project ICE-CRUNCH)

- आइस-क्रंच का अर्थ है:** उत्तर-पश्चिमी हिमालय में बर्फ के नाभिकीय कण और बादल संघनन नाभिक के गुण।
- यह भारत और स्विटजरलैंड के बीच एक सहयोगात्मक परियोजना है, जिसका उद्देश्य बादलों में सूक्ष्मभौतिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करना है, विशेष रूप से उत्तर-पश्चिमी हिमालय में बर्फ के नाभिक कणों (INP) और बादल संघनन नाभिक (CCN) पर ध्यान केंद्रित करना।
- INP और CCN बादल सूक्ष्मभौतिकी में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं - वे प्रभावित करते हैं कि बादल कैसे बनते हैं, बढ़ते हैं और वर्षा कैसे होती है।
- यह जम्मू और कश्मीर के नत्थाटॉप में नवनिर्मित हिमालयन हाई एल्टीट्यूड एटमॉस्फेरिक एंड क्लाइमेट रिसर्च सेंटर से संचालित होगा।

स्रोत: [PIB - ICE CRUNCH](#)

चित्तौड़गढ़ किला

- राजस्थान सरकार चित्तौड़गढ़ किले के 10 किलोमीटर के दायरे में पूर्ण खनन प्रतिबंध लगाने पर विचार कर रही है।

चित्तौड़गढ़ किले के बारे में -

- यह किला राजस्थान के चित्तौड़गढ़ शहर में स्थित है। यह भारत के सबसे बड़े किलों में से एक है।
- इसका निर्माण स्थानीय मोरी राजपूत शासक - चित्रांगद मोरी ने 7वीं शताब्दी ई. में करवाया था।
- इसे 728 ई. में मेवाड़ शासकों ने अपने कब्जे में ले लिया था। बाद में यह उनकी राजधानी बना।
- इसने कई घेराबंदी और लड़ाई देखी है, जिनमें अलाउद्दीन खिलजी (1303), बहादुर शाह (1533) और अकबर (1567-1568) के खिलाफ लड़ाई भी शामिल है।
- यह किला रानी पद्मिनी की पौराणिक छवि और जौहर की अवधारणा से जुड़ा हुआ है।
- इसे 2013 में यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।
- अंदर स्थित उल्लेखनीय स्मारक:
 - विजय स्तम्भ (विजय की मीनार)
 - कीर्ति स्तम्भ (प्रसिद्धि की मीनार)



स्रोत: [Indian Express - Chittorgarh Fort](#)

सोयूज एयरक्राफ्ट

- हाल ही में सोयुज अंतरिक्ष यान ने एक अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री और दो रूसी अंतरिक्ष यात्रियों को सुरक्षित रूप से अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) तक पहुंचाया।

सोयूज एयरक्राफ्ट के बारे में -

- यह एक रूसी अंतरिक्ष यान है जिसका उपयोग 1960 के दशक से अंतरिक्ष यात्रियों को अंतरिक्ष में ले जाने और वापस लाने के लिए किया जा रहा है।
- सोयुज कार्यक्रम अंतरिक्ष अन्वेषण के इतिहास में सबसे लंबे समय तक चलने वाला मानव अंतरिक्ष यान कार्यक्रम है।
 - अंतरिक्ष में इसकी पहली चालक दल उड़ान 23 अप्रैल 1967 को हुई थी।
- यह तीन अंतरिक्ष यात्रियों को ले जा सकता है।
- यह 3 मॉड्यूल से बना है: ऑर्बिटल मॉड्यूल, सर्विस मॉड्यूल और डिसेंट मॉड्यूल।



स्रोत: [NASA - Soyuz](#)

बायोमास उपग्रह (Biomass Satellite)

- बायोमास एक यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA) पृथ्वी अवलोकन उपग्रह है।
- यह पी-बैंड रडार ले जाने वाला पहला उपग्रह है, जो एक लंबी तरंग दैर्ध्य वाला रडार है जो जंगल की छतरियों में गहराई तक प्रवेश करता है।
- बायोमास मिशन के मुख्य उद्देश्य:

- भूमि के ऊपर वन बायोमास का अनुमान लगाना।
- विस्तृत 3D वन संरचना मानचित्र प्रदान करना।
- कार्बन भंडारण में वनों की भूमिका को समझना।
- सटीक बायोमास डेटा का उपयोग करके जलवायु परिवर्तन की भविष्यवाणियों में सुधार करना।

स्रोत: **BBC - Biomass Satellite**

स्लोवाकिया

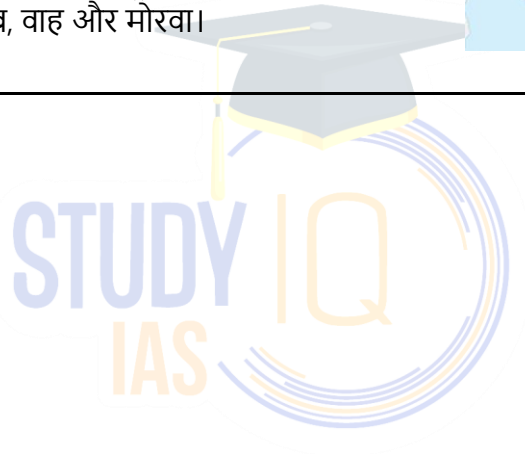
- हाल ही में भारत के राष्ट्रपति ने स्लोवाकिया का दौरा किया।

स्लोवाकिया के बारे में -

- **अवस्थिति:** यह मध्य यूरोप का एक स्थलरुद्ध देश है।
- **सीमावर्ती देश:** पोलैंड, यूक्रेन, हंगरी, ऑस्ट्रिया और चेक गणराज्य।
- **यूरोपीय संघ और नाटो का सदस्य है।**
- **जनवरी 1993 में "वेलवेट डाइवोर्स (velvet divorce)"** होने तक यह **चेकोस्लोवाकिया** का हिस्सा था।
- **स्थलाकृति:** इसका उत्तरी भाग कार्पेथियन पर्वतों से घिरा हुआ है। (सबसे ऊंची चोटी - **हाई टाट्रास**)
- **प्रमुख नदियाँ:** डेन्यूब, वाह और मोरवा।



स्रोत: **PIB - Slovakia**



संपादकीय सारांश

भारत की चीन संबंधी उलझन को समझना

संदर्भ

शी जिनपिंग के नेतृत्व में चीन तेजी से डेंग शियाओपिंग के व्यावहारिक दृष्टिकोण से मुखर राष्ट्रवाद की ओर स्थानांतरित हो गया है।

समाचार के बारे में और अधिक जानकारी -

- उनके नेतृत्व में, चीन किंग-युग(Qing-era) की सीमाओं को बहाल करने का लक्ष्य बना रहा है, जो तनाव को बढ़ा रहा है, खासकर हिमालय जैसी सीमाओं पर।
- देपसांग (2013), डेमचोक (2016), डोकलाम (2017) और गलवान (2020) में भारत के साथ सीमा पर हुई झड़पें इस परिकल्पना की पुष्टि करती हैं।



भारत-चीन संबंधों में हालिया घटनाक्रम -

- 2024 के अंत में तनाव कम होने लगा, तथा LAC पर कई टकराव बिंदुओं पर ऑपरेशन आसान हो गए।
- रूस के कज़ान में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन (अक्टूबर 2024) से ठीक पहले प्रगति के औपचारिक बयान आए।
- एक अस्थायी भारत-चीन सीमा गश्ती समझौता पेश किया गया - हालाँकि इसमें पूर्ण विवरण का अभाव था, लेकिन इसने जमीनी तनाव को प्रबंधित करने के इरादे का संकेत दिया।
- सीमा मुद्दों को हल करने के लिए एक उच्च-स्तरीय तंत्र, विशेष प्रतिनिधि (एसआर) वार्ता को पुनर्जीवित करने के लिए बातचीत चल रही है।

भारत-चीन संबंधों में वर्तमान चुनौतियाँ -

- **विघटन ≠ तनाव में कमी:** जबकि कूटनीतिक पहल और सीमा गश्ती समझौतों से तनाव में नरमी का संकेत मिलता है, लेकिन जमीनी हकीकत तनावपूर्ण बनी हुई है:
 - चीन ने लद्दाख में टैंकों, हॉवित्जर और मिसाइल प्रणालियों से लैस 1 लाख से अधिक सैनिकों को तैनात किया हुआ है।
 - वास्तविक नियंत्रण रेखा पर पूर्ण पैमाने पर कोई तनाव कम नहीं हुआ है, न ही सैनिकों की वापसी हुई है।

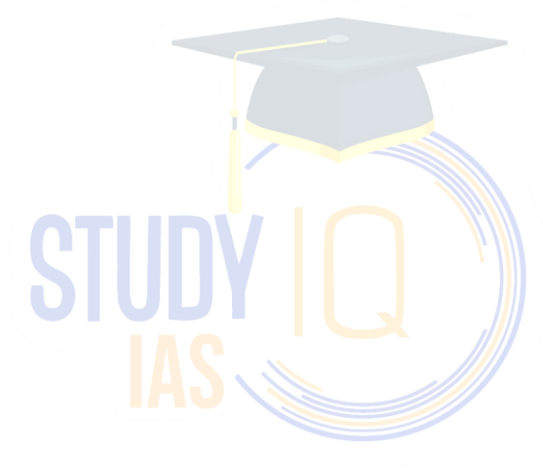
- **चीन की बढ़ती सैन्य श्रेष्ठता:** चीन ने मार्च 2025 तक अपने रक्षा बजट में 7.2% की वृद्धि की है - जो भारत से लगभग तीन गुना है।
 - चीन ने एआई-संचालित युद्ध, साइबर क्षमताओं, क्वांटम प्रौद्योगिकी और परमाणु हथियार (एसआईपीआरआई के अनुसार 100 से अधिक नए हथियार) में प्रगति की है।
- **भारत के पड़ोस में रणनीतिक अतिक्रमण:** चीन दक्षिण एशिया में रणनीतिक जमीन हासिल कर रहा है:
 - नये नेतृत्व के बाद बांग्लादेश का झुकाव बीजिंग की ओर बढ़ रहा है।
 - पश्चिम एशिया और उत्तरी अफ्रीका में, विशेष रूप से परमाणु ऊर्जा और बुनियादी ढांचे में प्रगति।
- **ऊर्जा सुरक्षा और अफ्रीका:** चीन परमाणु ऊर्जा संसाधनों को सुरक्षित करने में आगे है, विशेष रूप से अफ्रीका में, जबकि भारत पीछे है।
 - इसका दीर्घकालिक रणनीतिक प्रभाव और ऊर्जा स्वतंत्रता पर प्रभाव पड़ता है।
- **वैश्विक शक्ति प्रवाह और अप्रत्याशित गठबंधन:** वैश्विक व्यवस्था अधिक तरल होती जा रही है क्योंकि "नियम-आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था" कमजोर हो रही है, और कठोर शक्ति को प्राथमिकता मिल रही है।
 - भारत को संभावित कूटनीतिक बदलावों के प्रति सतर्क रहना चाहिए, जैसे कि अमेरिका-चीन के बीच संभावित मेल-मिलाप, जिससे भारत कूटनीतिक रूप से अलग-थलग पड़ सकता है।

भारत के लिए सिफारिशें -

- **रक्षा व्यय और आधुनिकीकरण में वृद्धि:** सकल घरेलू उत्पाद का कम से कम 2.5-3%।
 - एलएसी के साथ रक्षा बुनियादी ढांचे को प्राथमिकता देना, जिसमें पर्वतीय युद्ध क्षमताएं, एआई-संचालित खुफिया जानकारी एकत्र करना और साइबर-रक्षा उपाय शामिल हों।
 - स्वदेशी सैन्य प्रौद्योगिकी को बढ़ाने के लिए निजी रक्षा फर्मों और स्टार्टअप्स के साथ सहयोग करना।
- **सीमा सतर्कता को मजबूत करना:** पारदर्शी और सत्यापन योग्य प्रोटोकॉल के साथ सीमा गश्त समझौते को लागू करना।
 - परिचालन तत्परता बनाए रखने के लिए रणनीतिक सहयोगियों के साथ नियमित रूप से संयुक्त सैन्य अभ्यास आयोजित करना।
- **पड़ोसियों के साथ पुनः संपर्क बढ़ाना:** राजनयिक संपर्क बढ़ाना तथा बांग्लादेश, नेपाल और श्रीलंका जैसे देशों के साथ बुनियादी ढांचे, ऊर्जा और प्रौद्योगिकी पर ध्यान केंद्रित करते हुए रणनीतिक साझेदारी की पेशकश करना।
 - भारत को विकास सहायता भी प्रदान करनी चाहिए तथा यह सुनिश्चित करना चाहिए कि क्षेत्र में उसका प्रभाव केन्द्रीय बना रहे।
- **ऊर्जा सुरक्षा - परमाणु और गैर-परमाणु:** परमाणु ऊर्जा विस्तार में तेजी लाना, जिससे भारत को अफ्रीका और मध्य एशिया से यूरेनियम की आपूर्ति सुनिश्चित हो सके।
 - विकेन्द्रीकृत ऊर्जा उत्पादन के लिए, विशेष रूप से दूरदराज के क्षेत्रों में, छोटे मॉड्यूलर रिएक्टरों (एसएमआर) पर जोर दिया जाना चाहिए।
 - यह सुनिश्चित करना कि भारत की परमाणु ऊर्जा क्षमताएं इस क्षेत्र में चीन की बढ़ती बढ़त के साथ प्रतिस्पर्धी हों।
- **वैश्विक भू-राजनीतिक बदलावों के लिए तैयार रहें:** उभरते वैश्विक संरक्षण के बीच भारत के हितों की रक्षा करना।
 - क्वाड सदस्यों (अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया) के साथ मजबूत संबंध बनाए रखें और अमेरिका-चीन तनाव कम होने की स्थिति में कूटनीतिक लचीलापन सुनिश्चित करना।
 - चीन के प्रभाव से बाहर के देशों के साथ रक्षा, व्यापार और प्रौद्योगिकी साझेदारी का विस्तार करके भारत की सामरिक स्वायत्तता को मजबूत करना।
- **प्रौद्योगिकी और साइबर रक्षा:** प्रमुख क्षेत्रों में चीन के साथ प्रौद्योगिकी अंतर को कम करना।
 - एआई, क्वांटम प्रौद्योगिकी और साइबर क्षमताओं में निवेश बढ़ाना।

- साइबर सुरक्षा, एआई-सक्षम रक्षा प्रणालियों और वास्तविक समय डेटा विश्लेषण में अत्याधुनिक अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए एक सैन्य-तकनीक नवाचार केंद्र की स्थापना करना।

स्रोत: [The Hindu: Understanding India's China conundrum](#)



भारत को अपने छात्रों की सेवा के लिए अनुसंधान के बुनियादी ढांचे में सुधार करना होगा

संदर्भ

उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका जाने वाले छात्रों, विशेषकर भारतीय छात्रों की संख्या में गिरावट का रुझान है।

अध्ययन के लिए विदेश जाने वाले छात्रों में हालिया रुझान -

- **अमेरिका की लोकप्रियता में गिरावट:** अमेरिका निम्नलिखित कारणों से कम आकर्षक होता जा रहा है:
 - विदेश नीति के विरोध से जुड़े वीजा निरस्तीकरण।
 - वैकल्पिक व्यावहारिक प्रशिक्षण (OPT) जैसे कार्यक्रमों को रद्द करना।
 - विदेशी लोगों के प्रति घृणा बढ़ाना और आव्रजन नीतियों को कड़ा करना, विशेष रूप से ट्रम्प युग के दौरान और उसके बाद।
 - शोध के लिए धन की कमी और विश्वविद्यालयों पर दबाव, शैक्षणिक स्वतंत्रता को कम करना।
- **यूरोप में बढ़ती रुचि:** जर्मनी जैसे देश निम्नलिखित कारणों से लोकप्रियता प्राप्त कर रहे हैं:
 - कम ट्यूशन फीस।
 - अधिक लचीले कार्य-अध्ययन विकल्प।
 - विदेशी छात्रों और शोधकर्ताओं के प्रति स्वागत योग्य नीतियां।
- **भारत वापसी:** कुछ भारतीय पेशेवर और शोधकर्ता अपनी मातृभूमि में योगदान देने की इच्छा से प्रेरित होकर वापस आ रहे हैं।
 - हालाँकि, भारत में व्यवस्थागत चुनौतियाँ अक्सर उन्हें यहाँ रहने या आगे बढ़ने से हतोत्साहित करती हैं।

भारत में प्रणालीगत चुनौतियाँ -

- **नौकरशाही और लालफीताशाही:** शिक्षा, सरकार और उद्योग में प्रशासनिक प्रक्रियाएं अक्सर धीमी और अकुशल होती हैं।
 - परियोजना अनुमोदन, अनुदान वितरण और संस्थागत अनुमति में विलंब से अनुसंधान और नवाचार में बाधा आ सकती है।
- **योग्यता-आधारित प्रणालियों का अभाव:** नियुक्ति, पदोन्नति और वित्तपोषण में अक्सर भाई-भतीजावाद और पक्षपात योग्यता से अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं।
 - प्रतिभाशाली व्यक्तियों को प्रगति करने में कठिनाई हो सकती है जब तक कि उनके पास सही सम्पर्क न हों।
- **खराब अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र:** पश्चिमी देशों की तुलना में वित्त पोषण, आधुनिक प्रयोगशालाओं और शैक्षणिक संसाधनों तक सीमित पहुंच।
 - कई संस्थान शिक्षण-केंद्रित हैं, जिनमें अत्याधुनिक अनुसंधान या नवाचार पर बहुत कम जोर दिया जाता है।
- **कठोर संस्थागत पदानुक्रम:** भारतीय शैक्षणिक संस्थान अक्सर सख्त वरिष्ठता प्रणाली का पालन करते हैं।
 - युवा शोधकर्ताओं या संकाय सदस्यों को पुरानी प्रथाओं को चुनौती देने या साहसिक नए विचारों का प्रस्ताव देने में कठिनाई हो सकती है।
- **अपर्याप्त सहयोगात्मक संस्कृति:** विभिन्न विषयों या संस्थाओं के बीच सहयोगात्मक संस्कृति का अभाव है।
 - सहयोग के स्थान पर अलगाव और प्रतिस्पर्धा अनुसंधान प्रयासों के प्रभाव को सीमित कर सकती है।
- **सामाजिक बाधाएं और कार्य संस्कृति:** रूढ़िवादी कार्य वातावरण, लैंगिक पूर्वाग्रह और पुराने मानदंड विदेश में उदार, समावेशी माहौल के आदी लोगों के लिए परेशानी का कारण बन सकते हैं।

- कार्यस्थलों पर हमेशा स्वतंत्र सोच या असहमति को प्रोत्साहित नहीं किया जा सकता।
- **सीमित उद्योग-अकादमिक इंटरफेस:** विश्वविद्यालयों और उद्योगों के बीच सहयोग कमजोर है, जो अनुसंधान के व्यावहारिक अनुप्रयोगों को सीमित करता है।
 - स्टार्टअप और नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र, हालांकि बढ़ रहा है, लेकिन वैश्विक मानकों की तुलना में अभी भी विकासशील है।
- **शहरी बुनियादी ढांचा और जीवन की गुणवत्ता:** कई शहरों में यातायात, प्रदूषण, बिजली कटौती और अविश्वसनीय सार्वजनिक सेवाएं जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करती हैं।
 - ये कारक दैनिक जीवन को निराशाजनक बना सकते हैं, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो विदेशों में अधिक कुशल प्रणालियों के आदी हैं।
- **शैक्षणिक स्वतंत्रता और राजनीतिक हस्तक्षेप:** शैक्षणिक स्थानों में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सेंसरशिप और वैचारिक नियंत्रण को लेकर बढ़ती चिंताएं।
 - विद्वानों को यह महसूस हो सकता है कि वे क्या शोध या अध्यापन कर सकते हैं, इस पर उन पर प्रतिबंध है।

भारत छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए अपना रुख कैसे सुधार सकता है -

- **अनुसंधान वित्तपोषण को बढ़ावा देना:** सरकार को अनुसंधान में निवेश बढ़ाने की आवश्यकता है, प्रत्यक्ष रूप से तथा निजी संस्थानों को प्रोत्साहित करके।
 - शीर्ष वैश्विक विश्वविद्यालयों के समान अनुदान प्रणालियाँ और फेलोशिप स्थापित करना।
- **शैक्षिक सहयोग को मजबूत करना:** संस्थानों में अंतःविषयक कार्य और सहयोग को प्रोत्साहित करें।
 - संयुक्त अनुसंधान और नवाचार के लिए मंच और प्रोत्साहन सृजित करना।
- **सामाजिक और संस्थागत कठोरताओं से निपटना:** पदानुक्रमिक और नौकरशाही शैक्षणिक संरचना में सुधार करना।
 - योग्यतावाद, खुलेपन और नवाचार को प्रोत्साहित करना।
- **शैक्षणिक स्वतंत्रता की रक्षा करना:** शैक्षणिक संस्थानों में विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सुनिश्चित करना।
 - शैक्षिक प्रशासन को राजनीतिक प्रभाव से दूर रखना।
- **छात्र गतिशीलता और आदान-प्रदान को समर्थन देना:** विदेश जाने वाले भारतीय छात्रों के लिए छात्रवृत्ति कार्यक्रमों का विस्तार करना और उन्हें वापस लौटने के लिए प्रोत्साहित करना।
 - अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के साथ संयुक्त डिग्री कार्यक्रम बनाएं।
- **बुनियादी ढांचे और सुविधाओं में सुधार:** प्रयोगशालाओं, पुस्तकालयों और अन्य अनुसंधान बुनियादी ढांचे को वैश्विक मानकों के अनुरूप उन्नत करना।
 - शिक्षण वातावरण को डिजिटल बनाएं और आधुनिक शिक्षण उपकरणों को एकीकृत करना।
- **भारत को ज्ञान केन्द्र के रूप में पुनः ब्रांड करना:** भारतीय विश्वविद्यालयों को विश्व स्तर पर बढ़ावा देना।
 - खुली और निष्पक्ष वीज़ा नीतियों के माध्यम से विदेशी छात्रों और शिक्षकों को आमंत्रित करना - "ट्रम्पियन" प्रवृत्ति को उलटना।

स्रोत: [The Hindu: Home and abroad](#)

राज्यपाल की अनुमति शक्ति पर सर्वोच्च न्यायालय का हालिया फैसला

संदर्भ

सर्वोच्च न्यायालय ने तमिलनाडु राज्य विधानमंडल द्वारा पारित 10 विधेयकों पर निष्क्रियता के लिए तमिलनाडु के राज्यपाल आरएन रवि के खिलाफ कड़ा फैसला सुनाया है।

राज्यपालों से जुड़ी चुनौतियाँ -

- **पक्षपातपूर्ण व्यवहार:** केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त राज्यपाल अक्सर निर्वाचित राज्य सरकारों के कामकाज में हस्तक्षेप करते हैं, जिससे वे अकार्यात्मक हो जाते हैं।
 - यह बात विशेष रूप से तब स्पष्ट होती है जब राज्यपाल केन्द्र में सत्तारूढ़ पार्टी के होते हैं और राज्य सरकार का नेतृत्व विपक्षी पार्टी करती है।
 - इसमें विधेयकों को मंजूरी देने में देरी, कुलपतियों की नियुक्ति में हस्तक्षेप, तथा विधायी प्रक्रियाओं में हस्तक्षेप शामिल है, जो आमतौर पर निर्वाचित प्रतिनिधियों का क्षेत्राधिकार होता है।
- **राज्य सरकारों के साथ टकराव:** राज्यपालों ने राज्य विधानसभाओं द्वारा पारित विधेयकों पर स्वीकृति रोककर या देरी करके, मनमाने ढंग से विधानसभाओं को बुलाकर या स्थगित करके, तथा पारंपरिक अभिभाषणों को संपादित करके राज्य के मामलों में हस्तक्षेप किया है।
 - हाल के उदाहरणों में तमिलनाडु के राज्यपाल द्वारा विधेयकों को महीनों तक मंजूरी न देना तथा उन्हें राष्ट्रपति के पुनर्विचार के लिए भेजना शामिल है, जिसे मनमाना तथा असंवैधानिक माना गया।
- **कार्यकाल की सुरक्षा का अभाव:** राज्यपालों को केंद्र सरकार के विवेक पर हटाया जा सकता है, जिससे स्वतंत्रता में कमी आती है।
 - सुरक्षा की यह कमी उन्हें केंद्र के पक्ष में कार्य करने के लिए अतिसंवेदनशील बनाती है।
- **विवेकाधीन शक्तियों का दुरुपयोग:** राज्यपालों पर **अनुच्छेद-200** (विधेयकों पर स्वीकृति) और **अनुच्छेद-163** (मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह) के तहत अपनी विवेकाधीन शक्तियों का दुरुपयोग करने का आरोप लगाया गया है।
 - पूर्ण विवेकाधिकार अक्सर मनमाने निर्णयों को जन्म देता है जो संघवाद को कमजोर करते हैं।
- **नियुक्ति प्रक्रिया:** सरकारी आयोग जैसी संस्थाओं की सिफारिशों के बावजूद, राज्यपालों की नियुक्ति अक्सर राज्य के मुख्यमंत्रियों या अन्य हितधारकों से परामर्श किए बिना कर दी जाती है, जिससे उनकी निष्पक्षता पर सवाल उठते हैं।

सर्वोच्च न्यायालय का रुख -

- **सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला दिया कि राज्यपालों को विधेयकों पर स्वीकृति के संबंध में अनुच्छेद 200 के तहत पूर्ण विवेकाधिकार नहीं है।**
 - राज्यपालों के लिए विधेयक को मंजूरी देने, पुनर्विचार के लिए वापस भेजने, या राष्ट्रपति की मंजूरी के लिए विधेयक को सुरक्षित रखने के लिए सख्त समय-सीमा निर्धारित की गई थी।
 - न्यायालय ने सभी लंबित विधेयकों को स्वीकृत माना, यदि उनमें राज्यपाल द्वारा मनमाने ढंग से देरी की गई हो, तथा इस बात पर बल दिया कि ऐसी देरी असंवैधानिक है।
- **संवैधानिक कर्तव्यों की पुनः पुष्टि:** न्यायालय ने इस बात पर प्रकाश डाला कि **अनुच्छेद 159** के तहत राज्यपालों का दायित्व संविधान को संरक्षित, सुरक्षित और बचाव करना है।
 - इसमें उन उदाहरणों की आलोचना की गई जहां राज्यपालों ने दुर्भावना से काम किया या राजनीतिक कारणों से निर्णय में देरी की।
- **संघवाद और लोकतंत्र:** निर्णय में इस बात पर जोर दिया गया कि संघीय प्रणाली में निर्वाचित प्रतिनिधियों के पास मनोनीत राज्यपालों की तुलना में अधिक अधिकार होने चाहिए।
 - इसने इस सिद्धांत को बरकरार रखा कि राज्यों को अपने विशेष अधिकार क्षेत्र (7वीं अनुसूची) के अंतर्गत आने वाले विषयों पर कानून बनाने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।

- **ऐतिहासिक उदाहरण: रघुकुल तिलक बनाम गुजरात राज्य (1979)** मामले में न्यायालय ने माना कि राज्यपाल केंद्र के कर्मचारी नहीं हैं, बल्कि वे उच्च संवैधानिक पद पर हैं।
 - हालिया निर्णय राज्यपालों की मनमानी कार्रवाइयों पर अंकुश लगाकर इसी मिसाल को आगे बढ़ाता है।

निहितार्थ

- **संघवाद को मजबूत करना:** यह निर्णय राज्यपालों की विवेकाधीन शक्तियों को सीमित करके तथा यह सुनिश्चित करके संघीय सिद्धांतों को मजबूत करता है कि वे केंद्र सरकार के विस्तार के रूप में कार्य न करें।
- **समय पर विधायी प्रक्रियाएं:** विधेयकों की स्वीकृति या पुनर्विचार के लिए सख्त समय-सीमा लागू करने से विधायी प्रक्रियाएं अधिक कुशल हो जाएंगी और राजनीतिक हेरफेर की संभावना कम हो जाएगी।
- **मनमाने कार्यों पर अंकुश लगाना:** यह निर्णय राज्यपालों द्वारा मनमाने विलंब या विवेकाधीन शक्तियों के दुरुपयोग के विरुद्ध एक मिसाल कायम करता है, तथा यह सुनिश्चित करता है कि वे संवैधानिक सीमाओं के भीतर कार्य करें।
- **बढ़ी हुई जवाबदेही:** राज्यपालों को अब देरी या गैर-सच्ची कार्रवाइयों के लिए जवाबदेह ठहराया जाएगा, जिससे पक्षपातपूर्ण व्यवहार की घटनाओं में कमी आएगी।
- **नियुक्ति प्रक्रिया में सुधार:** यद्यपि इस निर्णय में प्रत्यक्ष रूप से इसका उल्लेख नहीं किया गया है, फिर भी यह निर्णय निष्पक्षता और स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के लिए राज्यपालों की नियुक्ति की प्रक्रिया में सुधार पर चर्चा को पुनः शुरू कर सकता है।
- **केंद्र-राज्य संबंधों पर प्रभाव:** इस निर्णय से राज्य के मामलों में केंद्र द्वारा नियुक्त राज्यपालों के हस्तक्षेप की गुंजाइश कम होकर केंद्र-राज्य संबंधों में पुनः सुधार हो सकता है।

स्रोत: [Indian Express: Raj Bhavan Boundaries](#)

